



SHRI RAMESH RAGHUNATH PATANGE

Shri Ramesh Raghunath Patange is an eminent writer, thinker and social activist. He is the Chairman of the Hindustan Prakashan Sanstha, Mumbai. Besides this, he is co-founder of Samajik Samarasata Munch, Bhatke Vimukta Vikas Parishad [Nomadic Tribes Development Council], Samarasata Sahitya Parishad, Samarasata Adhayan Kendra, Vivek Vyaspeeth.

2. Born on 9th August, 1944, Shri Patange received his Master of Arts degree from the University of Mumbai in 1972. During Emergency, he went underground and was arrested in 1976 along with Shri Ravindra Varma, the then General Secretary of All India Jana Sangharsha Samittee. He was put under Maintenance of Internal Security Act (MISA) and send to Thane Jail, where he remained for 14 months. From 1977 to 1985, he served as the Director of Udyog Krishi Vikas Mandal, a NGO formed with the objective to develop Entrepreneurship among youths.

3. In 1985, Shri Patange joined Vivek Weekly as co-editor and subsequently become the Chief Editor of the Weekly. Under his leadership, the Vivek reached nooks and corner of Maharashtra. Under his editorship, various volumes were published, such as Govigyan, RashtraRatna Atalji, Kritirup Samarasata, Rashtra Rushi Shri Guruji, Kritirup Vivekananda, Pandit Deendayal Upadhyay, Lokneta-Vishwaneta, etc.

4. Shri Patange has penned numerous articles on Mahatma Phule and Dr. B.R.Ambedkar. His books on Dr. B.R.Ambedkar, such as Sangharsha Mahamanvache, Social Justice and Dr. Ambedkar, Ambedkar and Vivekananda, Dr. Ambedkar a Nation Builder are widely read books. He has written four books on the Constitution of India and another four books on the Constitution of America, Britain, France and Russia. He has delivered lectures on Dr. B.R.Ambedkar, Samarasata and the Constitution of India in major Universities of India, various colleges and intellectual forums. He served as member of India Book Trust, Bharat Bhavan Bhopal, Raja Rammohan Roy foundation and Central Board of Film Certification. His three books, Me Manu Ani Sangh[I, Manu and RSS], Angustan Te Lekhani [From Tailor to Writer], and Samarastecha Vatsaru [Journey of Samarasata] are his thought stories. These books are regarded as distinct and unique literary contribution in Marathi Literature.

5. Shri Patange has devoted major part of his life in eradication of caste hierarchy in Hindu Society, practice of untouchability and social injustices. Under his parentership schools for the boys and girls of the Nomadic Tribes are run in Chinchwad (Pune) Yamgarwadi [Dharashiv district] Maharashtra, wherein near about 900 nomadic tribes students are getting education from class one to ten. To create public awareness, under his guidance various seminars, conferences are conducted on the topics of evils of untouchability, caste discriminations and essentials of the Constitution of India.

6. Shri Patange is the recipient of numerous awards and honours. Madhya Pradesh Government has awarded him Manikchand Vajpayee Rastriya Patrakarita Puraskar, Government of Maharashtra has awarded him Lokmanya Tilak Jeevan Gourav Patrakarita Puraskar, Dr. Shyama Prasad Mukherji Nyas has awarded him Boudhik Yoddha Sanman. Late Prime Minister Shri Atal Bihari Vajpayee awarded him Panchajanya Nachiketa Puraskar. Various local bodies have conferred on him various awards for his social, literary and editorial work.



श्री रमेश रघुनाथ पतंगे

श्री रमेश रघुनाथ पतंगे एक प्रसिद्ध लेखक, विचारक और सामाजिक कार्यकर्ता हैं। वह हिंदुस्तान प्रकाशन संस्था, मुंबई के अध्यक्ष हैं। इसके अलावा, वह सामाजिक समरसता मंच, भटके विमुक्त विकास परिषद (धुमंतू जनजाति विकास परिषद), समरसता साहित्य परिषद, समरसता अध्ययन केंद्र, विवेक व्यासपीठ के सह-संस्थापक हैं।

2. 9 अगस्त 1944 को जन्मे, श्री पतंगे ने 1972 में मुंबई विश्वविद्यालय से मास्टर ऑफ आर्ट्स की डिग्री प्राप्त की। आपातकाल के दौरान, वह भूमिगत हो गए और 1976 में अखिल भारतीय जनसंघर्ष समिति के तत्कालीन महासचिव श्री रविंद्र वर्मा के साथ गिरफ्तार कर लिए गए। उन्हें मेंटेनेंस ऑफ इंटरनल सिक्योरिटी एक्ट (मीसा) के तहत बंद रखा गया और ठाणे जेल भेज दिया गया, जहां वह 14 महीने तक रहे। 1977 से 1985 तक, उन्होंने युवाओं के बीच उद्यमिता विकसित करने के उद्देश्य से गठित एक गैर सरकारी संगठन, उद्योग कृषि विकास मंडल के निदेशक के रूप में कार्य किया।

3. 1985 में श्री पतंगे 'विवेक वीकली' में सह-संपादक के रूप में शामिल हुए और बाद में वीकली के मुख्य संपादक बने। उनके नेतृत्व में 'विवेक' महाराष्ट्र के कोने-कोने तक पहुंचा। उनके संपादन में गोविज्ञान, राष्ट्ररत्न अटलजी, कृतिरूप समरसता, राष्ट्र ऋषि श्री गुरुजी, कृतिरूप विवेकानंद, पंडित दीनदयाल उपाध्याय, लोकनेता-विश्वनेता आदि जैसे विभिन्न खंड प्रकाशित हुए।

4. श्री पतंगे ने महात्मा फुले और डॉ. बी.आर. अम्बेडकर पर कई लेख लिखे हैं। डॉ. बी.आर. अम्बेडकर पर उनकी पुस्तकें जैसे संघर्ष महामनवाचे, सामाजिक न्याय और डॉ. अम्बेडकर, अम्बेडकर और विवेकानंद, डॉ. अम्बेडकर एक राष्ट्र निर्माता, व्यापक रूप से पढ़ी गई पुस्तकें हैं। उन्होंने भारत के संविधान पर चार पुस्तकें और अमेरिका, ब्रिटेन, फ्रांस तथा रूस के संविधान पर अन्य चार पुस्तकें लिखी हैं। उन्होंने भारत के प्रमुख विश्वविद्यालयों, विभिन्न कॉलेजों और बौद्धिक मंचों पर डॉ. बी.आर. अम्बेडकर, समरसता और भारत के संविधान पर व्याख्यान दिए हैं। उन्होंने इंडिया बुक ट्रस्ट, भारत भवन भोपाल, राजा राममोहन राय फाउंडेशन और केंद्रीय फिल्म प्रमाणन बोर्ड के सदस्य के रूप में कार्य किया। उनकी तीन पुस्तकें, मी, मनु अनी संघ (मैं, मनु और आरएसएस), अंगुस्तन ते लेखनी (दर्जी से लेखक तक), और समरस्तेचा वत्सरु (समरसता की यात्रा) उनकी विचारकथाएं हैं। इन पुस्तकों को मराठी साहित्य में विशिष्ट और अद्वितीय साहित्यिक योगदान माना जाता है।

5. श्री पतंगे ने अपने जीवन का एक बड़ा हिस्सा हिंदू समाज में जाति प्रथा, अस्पृश्यता और सामाजिक अन्याय के उन्मूलन में लगाया है। चिंचवाड़ (पुणे) यमगरवाड़ी (धाराशिव जिला) महाराष्ट्र में उनके संरक्षण में खानाबदोश जनजातियों के लड़कों और लड़कियों के लिए स्कूल चलाए जाते हैं, जिनमें खानाबदोश जनजाति के लगभग 900 छात्र कक्षा एक से दस तक की शिक्षा पा रहे हैं। जन जागरूकता पैदा करने के लिए, उनके मार्गदर्शन में अस्पृश्यता, जातिगत भेदभाव की बुराइयों और भारत के संविधान के मूल तत्वों जैसे विषयों पर विभिन्न संगोष्ठियों, सम्मेलनों का आयोजन किया जाता है।

6. श्री पतंगे को कई पुरस्कारों और सम्मान मिल चुके हैं। मध्य प्रदेश सरकार ने उन्हें माणिकचंद वाजपेयी राष्ट्रीय पत्रकारिता पुरस्कार से नवाजा है। महाराष्ट्र सरकार ने उन्हें लोकमान्य तिलक जीवन गौरव पत्रकारिता पुरस्कार से सम्मानित किया है। डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी न्यास ने उन्हें बौद्धिक योद्धा सम्मान प्रदान किया है। दिवंगत प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने उन्हें पांचजन्य नचिकेता पुरस्कार से सम्मानित किया। विभिन्न स्थानीय निकायों ने उनके सामाजिक, साहित्यिक और संपादकीय कार्यों के लिए उन्हें विभिन्न पुरस्कारों से सम्मानित किया है।